

पार्किन्संस में गतिय लक्षण (Motor Symptoms)

संस बीमारी की पहचान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले तीन प्रमुख गतिय लक्षणों को लक्षणों की त्रयी कहा जाता है।

- कंपन; हाथ-पैरों का कंपना जो आमतौर पर हाथों और पैरों को ही प्रभावित करता है परंतु कई बार होंठ, जीभ, जबड़े, पेट तथा छाती को भी प्रभावित करता है। विशेष रूप से प्रभावित हिस्से में कंपन तब होता है जब प्रभावित हिस्सा स्थिर होता है और उसमें किसी प्रकार की गति होने पर लक्षण समाप्त हो जाते हैं। इसलिए इन कंपनों को स्थिरता कंपन (Resting Tremors) कहा जाता है।
- कठोरता; या मांस पेशियों का कड़ा हो जाना, इसके अंतर्गत प्रभावित मांसपेशी हमेशा दबाव या संकुचन (contraction) की स्थिति में रहती हुई प्रतीत होती है और जब उसमें कोई गति नहीं होती तो भी वह शिथिल नहीं होती। यह शरीर में पीड़ा और दर्द के लिए जिम्मेदार है। इस प्रकार की कठोरता को प्लास्टिक या पैसिव कठोरता (Passive rigidity) कहा जाता है। निष्क्रिय गति से हमेशा एक समान गतिरोध रहता है या हाथ और पैर तथा और मांसपेशियां चलती रहती है।
- शरीर की गतियों का धीमा हो जाना ब्रैडीकिनेशिया (Bradykinesia) कहलाता है। इसके अंतर्गत न केवल किसी प्रकार की क्रिया को करने की गति में धीमापन आ जाना शामिल है बल्कि किसी प्रकार की नई गति या हलचल करने में भी आना-कानी और जल्दी से थकान हो जाना शामिल है।

इसके अलावा स्वतः होने वाली क्रियाओं जैसे पलकें झपकाना, चलते समय बाजुओं का आगे-पीछे हिलना, बातें करते समय हाथों के इशारों का प्रयोग, चेहरे के हाव भाव दर्शाने वाली क्रियाएं आदि में भी कमी आनी शुरु हो जाती है। ब्रैडीकिनेशिया से निम्न भी हो सकता है:

- बिस्तर में करवट बदलना या कुर्सी से उठना
- हाथ की लिखाई में बहुत अधिक स्पष्ट परिवर्तन; एक पेज से दूसरे पेजों की तरफ जाते हुए वर्ण छोटे होते जाते हैं और आसानी से पढ़े नहीं जाते।

पोस्चर में परिवर्तन तथा संतुलन में कठिनाइयाँ पार्किन्संस बीमारी के दौरान होने वाले अन्य महत्वपूर्ण गति से संबंधित लक्षण हैं।

समय के साथ-साथ किसी व्यक्ति की चाल में भी परिवर्तन देखे जा सकते हैं, कदम छोटे-छोटे हो जाते हैं, एक पैर के स्थान पर दूसरा पैर रखना, मुड़ने में कठिनाई (संतुलन खराब हो जाने के डर से) आदि।

दवाइयों से बीमारी के कुछ लक्षणों को नियंत्रण में करने में सहायता मिलती है। व्यायाम से दवाइयों के प्रभाव में वृद्धि होती है और मांस पेशियों का फुर्तीलापन बनाए रखने में सहायता मिलती है। व्यायाम से मांसपेशियों की जकड़न कम हो सकती है और गतिशीलता, पोस्चर, संतुलन में सुधार होता है तथा इससे संतुलन और चलने में होने वाली समस्याओं पर भी काबू पाने में सहायता मिलती है। इसके कारण किसी व्यक्ति के दैनिक जीवन की गुणवत्ता में भी बहुत अधिक सुधार होता है और इसका सीधा प्रभाव कुछ लक्षणों जैसे जकड़न तथा धीमेपन पर भी पड़ता है।